एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

Scanned by CamScanner

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

भाग-16

****

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

****

Scanned by CamScanner

पंचम पत्र - 'नाट्य साहित्य'

****

जयशंकर प्रसाद- 'अजातशत्रु'

Scanned by CamScanner

[अध्ययन व विश्लेषण भाग -15 का शेष (नाटक का मूल पाठ)...]

द्वितीय दृश्य

****

महाराज बिम्बिसार एकाकी बैठे हुए आप - ही - आप कुछ विचार रहे हैं।

Scanned by CamScanner

बिम्बिसार : आह, जीवन की क्षणभंगुरता देखकर भी मानव कितनी गहरी नींव देना चाहता है। आकाश के नीले पत्र पर उज्ज्वल अक्षरों से लिखे अदृष्ट के लेख जब धीरे-धीरे लुप्त होने लगते हैं, तभी तो मनुष्य प्रभात समझने लगता है, और जीवन-संग्राम में प्रवृत्त होकर अनेक अकाण्ड-ताण्डव करता है। फिर भी प्रकृति उसे अन्धकार की गुफा में ले जाकर उसका शान्तिमय, रहस्यपूर्ण भाग्य का चिट्ठा समझाने का प्रयत्न करती है; किन्तु वह कब मानता है? मनुष्य व्यर्थ

Scanned by CamScanner

महत्त्व की आकांक्षा में मरता है; अपनी नीची, किन्तु सुदृढ़ परिस्थिति में उसे सन्तोष नहीं होता; नीचे से ऊँचे चढ़ना ही चाहता है, चाहे गिरे तो भी क्या?

छलना : (प्रवेश करके) और नीचे के लोग वहीं रहें! वे मानो कुछ अधिकार नहीं रखते? ऊपरवालों का यह क्या अन्याय नहीं है

बिम्बिसार : (चौंककर) कौन, छलना?

छलना : हाँ, महाराज! मैं ही हूँ।

Scanned by CamScanner

बिम्बिसार : तुम्हारी बात मैं नहीं समझ सका?

छलना : साधारण जीवों में भी उन्नति की चेष्टा दिखाई देती है। महाराज! इसकी किसको चाह नहीं है। महत्त्व का यह अर्थ नहीं कि सबको क्षुद्र समझे।

बिम्बिसार : तब?

Scanned by CamScanner

छलना : यही कि मैं छोटी हूँ, इसलिए पटरानी नहीं हो सकी, और वासवी मुझे इसी बात पर अपदस्थ किया चाहती है।

बिम्बिसार : छलना! यह क्या! तुम तो राजमाता हो। देवी वासवी के लिए थोड़ा-सा भी सम्मान कर लेना तुम्हें विशेष लघु नहीं बना सकता-उन्होंने कभी तुम्हारी अवहेलना भी तो नहीं की।

छलना : इन भुलावों में मैं नहीं आ सकती। महाराज! मेरी धमनियों में लिच्छवि रक्त बड़ी शीघ्रता से दौड़ता है। यह नीरव

Scanned by CamScanner

अपमान, यह सांकेतिक घृणा, मुझे सह्य नहीं और जबकि खुलकर कुणीक का अपकार किया जा रहा है, तब तो...

(नाटक का शेष मूल पाठ भाग-17 में....)

Scanned by CamScanner